

DPN 6231

Title: अहोरात्र यज्ञविधि AHORĀTRA YAJNA VIDHI

Run. No. 6922

Cat. No.

Micro. No.

Subject विधि / Ritual

Religion: Hindu / Bauddha

Language: Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. / नेपालभाषा निर्देश /

newa direction.

Size in cms. 24 x 11

Folios 36

Lines (in a page) 23

पत्राङ्क यथा मतः ३

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

no folio number written.

Author / translator

Scribe / donor

राजेन्द्र श्रेष्ठ Rajendra Shrestha

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script: New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus.:

Material: palmleaf / paper / thyasaphu / हलौल रङ्गमा ॥ १॥ मल्लु ॥ (पत्राङ्क नेपाली भाषा)

Condition: fine / damaged by worms, rats, water / yellow experimented thick nepalese paper.

Beginning, colophon, post-colophon:

↓
ॐ नमो ब्रह्मे नमः ॥ अहोरात्र यज्ञ विधि लिख्यते ॥ गृह्यसूत्रे विधि पूजा वर्ण, यथोक्त
माये ॥

समाप्ति (colophon)

इति ब्रह्मसूत्रम् यदा विद्वेः समाप्तः ।।



10

5

0 cms.

5

10

15

20

25



उलनेद्यत॥ सास्त्र न देवतायेन
 म॥ ॐ नमोऽसि ॥ ॥ अग्नयलिङ्ग
 ॐ गव न देवतायेन म॥ ॐ निधाना
 मासि ॥ ॥ नमोऽसि ॥ ॥ विदेवता
 येन म॥ ॐ ग्रायुत ॥ ॥ वायव्य
 मय ॥ ॐ नादन देवतायेन ॥ ॐ ग
 ध्वावा ॥ ॥ ॐ गमनक ॥ ॐ मदक ॥
 वरुण देवतायेन म॥ ॐ वरुण
 लेन म॥ ॥ ॐ देवस्यत्वा ॥
 म॥ ॐ वक्र देवतायेन म॥ ॐ वक्र
 यस्तान ॥ ॐ देवस्यत्वा ॥ ॐ मयगी
 अयुक्त ॥ ॥ थगवदन वक्रयागसं
 मने ॥ ॐ सम्यया मिसमायडावधी
 रि॥ समाषधया वसना म॥ प्रवती
 ऊंगतीरी॥ यचक्रो॥ समधूमती
 मधूमती रि॥ यचक्राम् ॥
 ॐ ऊनेय हो त्रासं यो मीदम ॥ गृवि
 दमन्ना यामयो विष त्वा यममि
 विष्णु यत्रुयथ ॥ ३३ यथ स्वाव
 गेयकूयति॥ यथ ताममिष्टे त्वचं
 माहि॥ सी देवस्त्वा सविता गृयय

उवविष्णु विनाक ॥ विनागदत्वा ॥
 नकलागलिङ्ग ॥ ॐ गुरुव ॥ ॥
 नकलाग अग्निसि ॥ ॐ नवावती
 न ॥ ॐ नकलाग ऊजमानसि ॥
 ॐ देविष्णु ॥ मयजितजयवध
 न ॥ ॐ यतिष्णु ॥ ॐ मनीहूति ॥
 निवस्तान ॥ ॐ तत्वाजामि ॥ ॐ देव
 स्यत्वा ॥ ॐ यय॥ यथियाजि ॥ ॐ
 वक्रयस्तान ॥ ॐ विष्णु नवाट ॥
 ॐ नम॥ मं रुवायच ॥ ॐ निधाना
 मासि ॥ ॥ आवाहनादि ॥ यतिष्णु ॥
 ॐ मनीहूति ॥ मय ॥ ॐ न
 म॥ मिवाय देवाय ॥ ॥ स्वर्तमार
 ने गुरु मम कदा वसावेक ॥ वि
 न्दविष्णु मव देव मद्रवपलमा
 यदं ॥ निवदिसऊने ॥
 ॐ गमनवद्वनिकल ॥ ॥ यनिष्णु
 य ॥ ॥ मययनिनीकूली ॥ ॐ
 मयगी ॥ यथीस्त्रायन ॥ ॐ स
 फइ ॥ ॐ निवथमक वक्रकामम
 जाविष्णुसिफताया ॥ ॥ तनारिचक्र
 मऊ नमनवय ॐ नाविष्णु युवना
 निततस्त्र ॥ ॥ ॥ मिसीमाऊने ॥

दक्षिण द्वात्रयं ॥ गायत्री मंत्रं लनि
नीकृष्णं ॥ दक्षिण द्वात्रय उद्गम वद
कायं ॥ द्वात्रयं ॥ ॐ न त्वां जामि ॥
आसर्न ॥ ॐ देवस्य त्वा ॥ अस्मूकृष्णं ॥
गोत्रं लय ॥ ॐ च त्वा निगृह्य ॥
उद्गम द्वात्रय ॥ ॐ द्वात्रयं देवी ॥

यष्टिमद्यावयूजा॥ गमयतीमकुलानि
 नाकुलं॥ यष्टिमद्यायश्रुत्वकृत्वा
 यष्टुदमासुनं२॥ ॐ तत्त्वामि॥ अ
 सुनं॥ ॐ देवस्यत्वा॥ अष्टयुक्तं॥ ता
 नमय२॥ ॐ चत्वारिंशं॥ कल्या
 नदावाय२॥ ॐ द्वात्रिंशद्वी॥ यथय
 २॥ ॐ जगत्पन्था॥ वृत्ताय२॥ ॐ यष्ट
 कृत्वाष्टिअला॥ धृति२॥ ॐ विष्णु
 कृत्वा॥ विष्णु२॥ ॐ दिवावाविष्णु॥
 आवाहनादि॥ धूप, दीप, जप, स्तुति॥
 महावीर्यमहाकार्यं सुवर्णसदृशं
 पुरं॥ तज्जघानस्मिन्नामि, ह्रमहर्
 मिनात्रयं॥ अगमन्मादि॥

उल्लङ्घनयूजा ॥ भयतीमरुलानिनी

अथ कृष्णलोकमर्थक्यात् ॥ पादुखीधि
 त्वा ॥ यजमानयुथराजने ॥ अथादि ॥
 मयाघ ॥ गुर्वनमस्तान ॥ न्यास ॥ अ
 ध्यातृयुजा ॥ आत्मयुजा ॥ वन्दना
 दि ॥ ॥ ॐ मादा ॥ ॥ ग्यानखभ
 ग्रहर्न ॥ वामहस्तनिधाय ॥
 वलिपुदान ॥ ॐ गलनात्वा ॥ गल
 यत्रिवलि ॥ ॐ नमाव ॥ गमय ॥ ॐ

नुवलि॥ ॐ जातवदस॥ इन्द्रवलि॥
 ॐ छतैद्यतयावान॥ दिगवलि॥
 काकासकस॥ अरुगन्धदि॥
 ॐ त्वंजविष्टदा॥ मयगीमर्कुलीकृत्
 निरीकुली॥ ॐ यद्वेदाद॥ ॐ मान
 साक॥ ॐ त्वंदि॥ ॐ तत्ताजापि॥
 मयगीमर्कुली॥ ॐ यद्विभनदकि
 (लदकि) (लनउरु) (उरु) (नलमधु)
 आश्रयायभुमावेखादकि (नपितु
 दवताउरु) (वेसासदवाना) (यांजापे
 त्वंउमधुमा॥ ॐ अश्वत्थं॥ ॐ स
 दसस्यति॥ ॐ वीरुयभुष॥ ॐ द
 वस्यत्वा॥ ॐ दिनवधगर्क॥ ॐ ता०
 सुविउ॥ दिनवधसकलस्यि॥
 ॐ यद्वानि॥ सुवर्णयज्ञनिधय॥
 ॐ तत्तापि॥ छतासर्न॥ त्वंजविष्ट
 दा॥ विष्णुर्लवष्टया॥ ॐ दिनवध
 व॥ ॐ त्वंदि॥ ॐ ॐन्धनास्वा॥
 ॐ सतवस्के॥ ॐ अग्निमृदा॥ ॐ
 रकादली॥ ॐ अश्वयोवा॥ ॐ कथा
 दमग्नि॥ अद्ययोषादकेनअरु
 क॥ ॥

श्रीगुरुभक्तसंनमः॥ गायत्री जयतः॥ ॐ
 नमो दादगयतः॥ ॐ श्रीगुरुभक्तः॥
 श्रीगुरुभक्तः॥ श्रीगुरुभक्तः॥ ॐ ल
 जा० ल० म० द० वा० आ० ति० उ० की० द० ल०
 श्रीनल० य० व० द० म० ल० य० वि०
 श्रीनल० य० म० द० म० नल० य०
 गता० श्रीगुरुभक्तः॥ ॐ श्रीगुरुभक्तः
 व० श्रीगुरुभक्तः॥ ॐ श्रीगुरुभक्तः॥ य
 थ० को० य० म० वा० य०॥ ॐ म० यि० द० द्रा
 म० य०॥ श्रीगुरुभक्तः॥ ॐ श्रीगुरुभक्तः
 वा० व० न० य० ॥ ॐ श्रीगुरुभक्तः॥ म० म०
 ता०॥ ॐ म० म० न० ति०॥ ॐ श्रीगुरुभक्तः॥
 का० य०॥ ॐ श्रीगुरुभक्तः॥ श्रीगुरुभक्तः
 ल०॥ ॥ श्रीगुरुभक्तः॥ ॐ श्रीगुरुभक्तः॥
 नमः॥ श्रीगुरुभक्तः॥ ॐ श्रीगुरुभक्तः॥
 श्रीगुरुभक्तः॥ ॐ श्रीगुरुभक्तः॥ श्रीगुरुभक्तः॥
 श्रीगुरुभक्तः॥ ॐ श्रीगुरुभक्तः॥ श्रीगुरुभक्तः॥
 ॐ श्रीगुरुभक्तः॥ ॐ श्रीगुरुभक्तः॥ श्रीगुरुभक्तः॥
 ॐ श्रीगुरुभक्तः॥ ॐ श्रीगुरुभक्तः॥ श्रीगुरुभक्तः॥
 ॐ श्रीगुरुभक्तः॥ ॐ श्रीगुरुभक्तः॥ श्रीगुरुभक्तः॥
 ॐ श्रीगुरुभक्तः॥ ॐ श्रीगुरुभक्तः॥ श्रीगुरुभक्तः॥

यश्चैव दायका न ददाऊं लभयामु
 देवताय रुद्राय नमः॥ दक्षि
 ण॥ साम वेदो यकाश्च यल्लग
 यत्र देवताय उगती रुद्राय न
 मः॥ यक्षिभे॥ अथ चैव दाय वेद
 नस्य लभयामु देवताय अन
 रुद्राय नमः॥ उरु ५॥
 ॐ नृदाय वक्र रुद्राय सुनाधिय
 तय नृदाय नमः॥
 ॐ अनय म कि रुद्राय तजाधिय
 तय क्का नमः॥
 ॐ यमाय द रुद्राय यताधिय त
 य मरुताय नमः॥
 ॐ नैज्याय रव रुद्राय वाकसा
 धिय तय नमः॥
 ॐ वरुणाय धनु रुद्राय जलाधि
 य तय मक नाय नमः॥
 ॐ वायवे धनु रुद्राय प्राणधिय
 तय रुद्रिणाय नमः॥
 ॐ कृष्णाय गदा रुद्राय यज्ञा
 धिय तय अग्नाय नमः॥

ॐ ॐ नमः नाय विष्णु लक्ष्मणाय
लोको धियतये नमः॥

ॐ विष्णु वै चक्र लक्ष्मणाय नागधिय
तये गजरासनाय नमः॥

ॐ बुद्ध लक्ष्मणाय लक्ष्मणाय स्व
गधियतये यथासनाय नमः॥

मध्व समस्त देवानामधिपूखा
य लोहितवर्णाय चक्र लक्ष्मणाय
दद्यात्सनाय स्वाहा येनो समन्ति
ताय वै नमो नमः॥

दसमिध हारमः॥ ॐ काय लक्ष्मणाय॥

ॐ कर्ण लक्ष्मणाय॥ ॐ अश्विद
व॥ अग्निर्मूर्खी कर्ण॥ बुद्धासनी॥

युगातासनी॥ यलवन आस्मासनी॥ ॐ
तिचलामनी॥ ॐ दिन लक्ष्मणाय॥ बुद्धा
सनी॥ ॐ ॐ दं विष्णु॥ युगातासनी॥

ॐ यत्पुष्टं नरु॥ यतर्थात्॥ अस्म
कली॥ ॐ आयादिष्टा॥ उदकयून लक्ष्म
णीत॥ बुद्धयुजनी॥ बुद्धयस्मान्॥ बु
द्ध्यास॥ ॐ न॥ यथासमस्ति नंदक
रुसुक्तं चतुर्नाननी॥ यो नीवीतं चतु
र्वादि॥ कर्ण दद्यात्कयुस्तर्क॥

ॐ बुद्ध लक्ष्मणाय नमः॥ युगाय नमः॥
सर्वे सादेव नमः॥

युगा नयुजा॥ ॐ ॐ दं विष्णु॥ विष्णु
स॥ ॐ न॥ यद्गुरु तो कर्णाय विष्णु
मर्कता निरी॥ नखचक्र गदोयर्षी वि
ष्णु लक्ष्मणाय॥ ॐ विष्णु नमः॥ यु
गाताय नमः॥ अश्वि नमः॥ अर्थाय
तये नमः॥ वरुणाय नमः॥

दक्षिणे वंका लक्ष्मणाय॥ ॐ आबुद्धी॥
उरु नयुगाता लक्ष्मणाय॥ ॐ विष्णु नमः॥
टमसि॥ पूर्ववत् बुद्धी युगातायुजनी॥

ॐ नकादुर्ग॥ यच्चसु उरुवर्षनी॥
ॐ कयातयिष॥ कर्ण नय निरुन
नी॥ यथा २ विधि मकुल कल गार्ध
नी॥

युद्धदा नयुजनी॥ गायत्री मकुल
निरी कली॥ न्यासयाय॥ ॐ तत्वा
जामि॥ आसनी॥ ॐ देवस्यत्वा॥ आ
सनी॥ गायत्री वल्लय नमः॥ ॐ
चेत्वा विष्णु ग॥ कनिगा वटकाय
नमः॥ ॐ कनिगुद॥ उवला का
य नमः॥ ॐ त० स वि०॥ यद्गुरु सा

स्वाय २॥ ॐ उदिव ॥ सुखानात्तु त्रिकम्प
 लद ॥ सुखं च विद्यां श्रुता न ह्यमात्रम्
 मिना तु मिता वन ॥ ॐ ध्रुव ॥ लव ॥ मर्म ॥
 वक्रवनि त्वा कुरु वनि नो यस्या यवनि
 ययूह मि ॥ वक्रद ॥ दुरुकुट ॥ दाय
 द ॥ दयुजा ॥ द ॥ जयाय २॥ ॐ रु
 ॐ ॥ विजयाय २॥ ॐ ॐ द विष्णु ॥
 दूमदधजाय २॥ ॐ अस्माकमिदु ॥ वे
 जायनमः ॥ ॐ विष्णु कर्म्मणि ॥ विपुल
 कजाय २॥ ॐ दृढस्य गच्छति न सि ॥
 यजायतय २॥ ॐ दृढस्य गच्छति ॥ की
 र्णियताकाय २॥ ॐ अत्र ॥ अविदे
 वताय २॥ ॐ उक्तयज्ञान ॥ कृताज्ञान
 य २॥ ॐ अकृताजाय कितव ॥ अत्र
 दाय २॥ ॐ अग्निमील ॥ सामाय २॥
 ॐ ॐ मन्दे वा ॥ अग्निनाय २॥ ॐ यद
 सुन्द ॥ पूष्यमालाय २॥ ॐ प्रीति ॥
 धन ॥ उवावत गजातूरु ॥ सुखं वलु
 किनाटिन ॥ सुखं नयनं गच्छ ॥ वज्र
 यालि विरावये ॥ ॐ दायवदुहका
 यस्याधियेतय ॥ उवावता सनाय धन
 पूष्यनमः ॥ ॐ गता नमिदु ॥ अवा
 दनादि ॥ बुडाधिकं उवावायनमः ॥

ॐ अश्ववाच ॥ दूधनयनिरुवली ॥
 ॐ कयानप्रिय ॥ ध्रुव ॥ ॐ वृवसि ॥ दीय ॥
 ॐ गजासि ॥ दल ॥ ॐ यारुलिनी ॥ ने
 शय ॥ ॐ अन्नयत ॥ यतिष्ठा ॥ ॐ मनी
 रूति ॥ जय ॥ सा ॥ नमो मुने गवीना
 थ ॥ पूष्यधियसूव ॥ यरुया गति
 यायानु ॥ नकार्थं सनिधीनव ॥ अज
 गन्धदि ॥

दक्षिणदिगद्वात्रयुजन ॥ अयजोमन्
 लनिवाकली ॥ ॐ तत्त्वाजामि ॥ अस्मन् ॥
 ॐ देवस्यत्वा ॥ अस्मन् ॥ ॐ तिष्ठ
 वं ॥ य २॥ ॐ चत्वाविष्ट ॥ मा
 म् ॥ अष्टकाय २॥ ॐ श्यामालकी ॥
 सुखीकाय २॥ ॐ मनसः काम ॥
 अजय ॥ अस्वाय २॥ ॐ उययाम
 दीर्घासि ॥ चदाय २॥ ॐ ॐ नाव
 ती ॥ उवदाय २॥ ॐ दव ॥
 पूष्यनीकधजाय २॥ ॐ अस्माक
 मोदु ॥ यमदुय २॥ ॐ अस्मि
 जमा ॥ दृढज्ञाय २॥ ॐ दृढस्य
 न ॥ विद्वियताकाय २॥ ॐ ॐ उ
 असा ॥ अविदेवाय २॥ ॐ अ
 म् ॥ अस्मि ॥ अताज्ञानय २॥

ॐ शुकनाजाय ॥ उरुवेदाय ॥ ॐ
 ॐ शुकनाजाय ॥ उरुवेदाय ॥ ॐ उरु
 ध्याय ॥ उरुवेदाय ॥ ॐ उरु
 स्यात् ॥ पूषमालाय ॥ ॐ श्रीयत् ॥
 ध्यान ॥ उरुगार्तमहिषा वरु ॥ दलु
 र्मरुयानर्क ॥ कालयामध्वनकार्दध
 यर्क दकिमधिर्य ॥ यमायदलुदे
 साययताधियतयमहिषासनाय
 ध्यानयूर्यनमः ॥ ॐ यमनदल ॥ श्र
 वादनादि ॥ रुगादिकुरुया नोय ॥
 ॐ नमावकुसाय ॥ अत्रिवतालाय ॥
 ॐ शुकनाजाय ॥ उरुवेदाय ॥
 न ॥ ॐ कयानलुग ॥ धूपदाय ॥
 यय ॥ प्रतिष्ठा ॥ ॐ मनाहूति ॥ जय ॥
 ता ॥ महिषाय विष्णोर्न सर्वला
 ककुर्यकर्न ॥ कालवृषमदोषोद
 दलुयालिनमाजुत ॥ अरुगन्धदि ॥

यष्टिमदिगुदानयूजन ॥ गमयतीम
 लुगानिनीकल ॥ ॐ तत्सामि ॥
 आसन ॥ ॐ दवस्यत्वा ॥ अरु
 ल ॥ निवृत्ति ॥ नमय ॥ ॐ च
 त्वाविष्ट ॥ गुरावाटकाय ॥

गन्नामि ॥ जनलाकाय ॥ ॐ शुकना
 अत्रि ॥ उरुवेदाय ॥ ॐ यत्त
 न्ध ॥ रुदाय ॥ ॐ विष्णोर्न काल
 डाय ॥ ॐ दिवावाविष्णोर्न काल
 जाय ॥ ॐ शुकनाकमिन्दु ॥ यामय ॥
 ॐ वरुगन्धदि ॥ कालिङ्गाय ॥ ॐ
 उरुवेदाय ॥ ॐ विष्णोर्न काल
 ॐ शुकनाकमिन्दु ॥ अत्रिवतालाय ॥
 ॐ विष्णोर्न काल ॥ दायवदनाय ॥
 ॐ शुकनाजाय ॥ गमयतीम ॥ ॐ
 अत्रिवतालाय ॥ गुरावाटकाय ॥ ॐ
 अत्रिवतालाय ॥ गमयतीम ॥ सनाद
 वी ॥ पूषमालाय ॥ ॐ श्रीयत् ॥
 ध्यान ॥ नागयामध्वनकार्दध
 यर्क दकिमधिर्य ॥ यमायदलुदे
 साययताधियतयमहिषासनाय
 ध्यानयूर्यनमः ॥ ॐ यमनदल ॥ श्र
 वादनादि ॥ रुगादिकुरुया नोय ॥
 लाय ॥ ॐ रुदानाम ॥ कालाक
 रुदानाय ॥ ॐ शुकनाकमिन्दु ॥
 कालाकमिन्दु ॥ ॐ कयानलुग ॥
 य ॥ धूपदाय ॥ रुल ॥ नय ॥ प्रतिष्ठा ॥

ॐ मना हूति ॥ जयस्तु ॥ वायुना तु
वल्गुधामं मकरासने गमिनि ॥ सर्वा
लंका वसो रायं याम हर्षनमामु
ते ॥ अंगनम्भदि ॥

उल्लुवदिकु द्वात्रयूजनी ॥ गायत्री मकु
लानि वीकली ॥ ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं ॥ भर्गो
देवस्य धियो रमन्ते ॥ धियो यो नः प्रचोदयात् ॥
ॐ वदस्व ता ॥ अस्मै कृणु ॥ अ
नाम्भदा वल्गुधामं ॥ ॐ चत्वारिंश
श्रु ॥ वदस्व ता ॥ ॐ यदवा
सा ॥ सत्यलोकाय ॥ ॐ ता अस्मभ्य ॥
विदुर्वल्गुधामं ॥ ॐ उवाच देव ॥
कितय ॥ ॐ यतद्विष्णु ॥ यतय ॥
ॐ विष्णु वराट ॥ मुसुखधजाय
२ ॥ ॐ अस्माकमिदु ॥ गदाय ॥
ॐ सुयन्त्रियार्जुन्य ॥ जातकृणाय
२ ॥ ॐ वदस्व ता ॥ साधुयता
काय ॥ ॐ वृत्त आसा ॥ अष्टिद
वताय ॥ ॐ जातवदसे ॥ कलियु
गमाय ॥ ॐ अक्रुताजाय ॥ अथ व
ददाय ॥ ॐ सन्नादवी ॥ नादव
२ ॥ ॐ कयानमि ॥ कतव २ ॥

कुरु कुरु न ॥ यथामालाय ॥ ॐ
गोपुत ॥ ॐ न ॥ कुरु वनमस्वमासो न
सगर्वं सर्वविग्रहं ॥ स्वर्गकोर्यंगदा
हर्षं ॥ उल्लुवदिकु द्वात्रयूजनी ॥ कुरु वना
यने कुरु लेहसायुधनाधियतेय दया
सनाय ॥ ॐ नयूय नमः ॥ ॐ कुरु विद
अजवमन् ॥ आवाहनादि ॥
विष्णु वरुणाय ॥ ॐ वृत्तवृत्त
वावान ॥ ॐ कयादे कुरु वा लाय ॥
ॐ नालया वा ॥ कुरु नयविस्तर
ली ॥ ॐ कयानमि ॥ ॐ वृत्तवृत्त
ले नयय ॥ ॐ विष्णु ॥ ॐ मना हूति ॥
जयस्तु ॥ ॐ कुरु वनमस्वमासो न
अम्भदेवल्गुधामं ॥ वत्सराव न
सर्वविष्णु गदाहर्षनमामुते ॥
अंगनम्भदि ॥

अत्रिदिकु लमयूजनी ॥ गायत्री मकु
लानि वीकली ॥ ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं ॥ भर्गो
देवस्य धियो रमन्ते ॥ धियो यो नः प्रचोदयात् ॥
ॐ वदस्व ता ॥ अस्मै कृणु ॥ सिद्धिदा वृ
काय ॥ ॐ अयना ॥ अत्रि ॥ अष्टिदा
य ॥ ॐ वदस्व ता ॥ कुरु वदस्व ता ॥
ॐ अस्माकमिदु ॥ गदाय ॥ ॐ य

उवाच ॥ छुणाय २ ॥ ॐ वृहस्पते ॥
 विजययताकाय २ ॥ ॐ ॐ नु आसा ॥
 अविदेवताय २ ॥ ॐ आ कृष्ण ॥ ध्यान ॥
 सकाचियधरविजाने अकमालाक
 मंजुली ॥ कानामाला कूलनके ॥
 र्कमकिधनके ॥ अत्रयमकिह
 सोयनेजाधियतयका मसनाय
 नमः ॥ ॐ अग्निमूढा ॥ आवाहनादि ॥
 पिबूना ककक उयाला य २ ॥ ॐ गु
 मकी ॥ कृ ॥ नयविस्त्रवर्ण ॥ ॐ कया
 नक्षि ॥ धूय ॥ दीय ॥ रुल ॥ नेवय ॥
 यतिष्ठा ॥ ॐ मनाहूति ॥ जय ॥ स्तुत ॥
 अ ॥ अत्रयमउमासीनं महातेजस
 मयुरी ॥ वक्रमाल्यामवधर्व ॥ मकि
 दसं नमाम्यहं ॥ अत्रगन्धदि ॥

नेमिदि कलमयुर्जनं ॥ मयरा
 मकुलनिना कर्ण ॥ ॐ तत्त्वजामि ॥
 आसने ॥ ॐ देवस्यत्वा ॥ अर्यु
 ण ॥ कालिदाटकाय २ ॥ ॐ सु
 सिन ॥ ॐ ॐ ॥ वृद्धिदाय २ ॥ ॐ अ

कन्कर्मकर्मकृत ॥ वामनाकध जाय
 २ ॥ ॐ अस्माकमानु ॥ खभाय २ ॥
 ॐ जातवेदसे ॥ कूलछुणाय २ ॥ ॐ वृ
 हस्पते ॥ धृतियताकाय २ ॥ ॐ ॐ नु
 आसा ॥ अविदेवताय वक्रद ॥ अय २ ॥
 ॐ विरुके न ॥ ध्यान ॥ वक्रनर्ग
 वावूरु ॥ नात्वायलदलयुर्ग ॥ कया
 नयालिने मेडी ॥ विवर्न वाकसम्भवे ॥
 नेमिप्राय खभाहस्ताय वाकसोपिय
 तययतासनाय नमः ॥ ॐ यनेदेवि ॥
 आवाहनादि ॥ अग्निजिह्वा कय्याला
 य २ ॥ ॐ वृषदस्वामनूत ॥ कृ ॥ न
 यविस्त्रवर्ण ॥ ॐ कयानाक्षि ॥ धू
 य ॥ दीय ॥ रुल ॥ नेवय ॥ यतिष्ठा ॥
 ॐ मनाहूति ॥ जय ॥ स्तुत ॥ नेमि
 त्यादिनिनाथस्त्रं सवा वूरु महा
 वर्ण ॥ वक्रमसिसेदायित ॥ खभाया
 लिनेमामुते ॥ अत्रगन्धदि ॥ ॥

वायवादि कलमयुर्जनं ॥ मयरा
 मकुलनिना कर्ण ॥ ॐ तत्त्वजामि ॥
 आसने ॥ ॐ देवस्यत्वा ॥ अर्यु

ली ॥ धृति वृत्ताय ॥ ॐ सतमिन्दु ॥
 सिद्धिदाय ॥ ॐ अनामिका ॥ सव
 ने उधजाय ॥ ॐ अस्माकमिन्दु ॥
 धृजदस्त्राय ॥ ॐ वायवायाहि ॥
 नाध्वज्जाय ॥ ॐ वृहस्पतेश्वरि ॥
 हृदियताकाय ॥ ॐ ॐ नुत्तु ॥
 अविदेवताय नमः ॥ ॐ सूर्य
 ॐ सि ॥ ध्यान ॥ आर्या न हवि त द्वाय
 विलासधजध्वनि ॥ या नरुत ॥
 रुताना हवि नरुत नमः ॥ वाय
 वे धृजदस्त्राय जलधियतय मृग
 सनाय ॥ ॐ तव वायु वृहस्पते ॥
 आवाहनादि ॥ कालवृषक्रयया
 य ॥ ॐ हृते हृते वा वा न ॥ क
 नय विरु वली ॥ ॐ कयानमि ॥
 धूप ॥ दीप ॥ रु ल ॥ नैव य ॥ पुतिष्ठा ॥
 ॐ मनाहृति ॥ जय स्मृत ॥ वमिन
 ॐ मरुताली सवृत्त तहताम्वरी
 मृगसनसमो राधु धृजदस्त्रे न
 मो मुते ॥ अ उ गन्धदि ॥ ॥
 ॐ नमनदिक कलसयूजन ॥

गयशामकुलनिनीकली ॥ ॐ त
 त्वाजामि ॥ आसन ॥ ॐ देवस्यत्वा ॥
 अयूकली ॥ भाकदावृत्ताय ॥ ॐ
 स्वस्ति यन्कामनूचले ॥ युद्धिदाय ॥
 ॐ वृहस्पतयविदोयानेथन ॥ स
 पुतिष्ठा धजाय ॥ ॐ अस्माकमिन्दु ॥
 विमूलदस्त्राय ॥ ॐ हृमके ॥ का
 लिङ्गाय ॥ ॐ वृहस्पते कृदि ॥
 सानयताकाय ॥ ॐ अस्ति ॥ अ
 विदेवतामहाकालाय ॥ ॐ नील
 जवा ॥ ध्यान ॥ ॐ नमन वृषमात्रु
 विमूलवालयध्वनि ॥ म न च द्वाव
 दात ॥ चन्द्रमो वि वि न चर्न ॥ ॐ
 नमनाय सवृत्त ताधियतय विमूले
 दस्त्राय वृषासनाय ॥ ॐ तमी न
 न ॥ आवाहनादि ॥ श्रीमवृषक्रु
 यालायनमः ॥ ॐ अध्ववाच ॥ क
 लनेय विरु वली ॥ ॐ कयानमि
 उ ॥ आवाहनादि ॥ धूप ॥ दीप ॥ रु ल ॥
 नैव य ॥ पुतिष्ठा ॥ ॐ मनाहृति ॥
 जय स्मृत ॥ ॐ नमन सवृत्त तमी
 वृषासनसमोस्ति ॥ ॐ लोका

धियर्तिर्गुरु, लया निनभा सु
त॥ अरुगन्धदि॥

अधुदिके लमयूजा॥ मयजीमकुल
निवाकल॥ ॐ तत्सो जामि॥ आसन॥
ॐ देवस्यत्वा॥ अरु कर्ण॥ द्रवधजा
यनम॥ ॐ अस्माकमिन्द॥ चक्रहस्ता
य॥ ॐ सुयलूयाकन्य॥ ध्वयकृता
य॥ ॐ देहस्यत॥ प्रियताकाय॥
ॐ तववायु॥ अधिदेवतनामय॥
ॐ नमामुसर्ध॥ ध्यान॥ अनन्ययु
नाकाक, रुणदगाय विपुत॥ विद्युदा
मयतीकोर्ग, कर्मावृत्ति, येयूजयत॥
विष्णुवचक्रहस्ताय अर्धधियतयक
मासिनाय॥ ॐ प्रिलियदा॥ आवा
रुनादि॥ मुकतुन्दक, उयालाय॥
ॐ अमा नूदाय॥ कृष्णनयत्रिभुव
ली॥ ॐ कयानमिषु॥ आवाहनादि॥
धूप॥ दीप॥ रुल॥ भवश॥ पुनिष्ठा॥
ॐ मनोहृति॥ जय, स्तुति॥ कर्मया
मसनंदक, विद्युत्पु, असमयति॥ अ
ध्वरोगल्लितविष्णु, चक्रया निनभा

अरु॥ अरुगन्धदि॥

उद्धृदिके कलसयूजने॥ मयजीमकु
लनिवाकल॥ ॐ तत्सो जामि॥ आसन॥
ॐ देवस्यत्वा॥ अरु कर्ण॥ द्रवधजा
जाय॥ ॐ अस्माकमिन्द॥ यद्रहता
य॥ ॐ यद्रानिल॥ गलकृताय॥
ॐ वृहस्पतेरुदि॥ पीतवर्णयताकाय
वायु, नधियतिदेवताय॥ ॐ तववा
यु॥ ध्यान॥ यानेपीतं चक्रवर्ति, वक्रा
लं चक्राननं॥ दंसयानश्च विजाली
दउरु, अरु कर्मकुल॥ वक्रलयाय
हस्ताय उद्धृधियतय, दंससनाय॥
ॐ वक्रलस्यत॥ आवाहनादि॥ भव
राखनक, उयालाय॥ ॐ विष्णुतय
क॥ कृष्णनयत्रिभुवली॥ ॐ कयान
मिषु॥ धूप, दीप॥ रुल॥ भवश॥ पु
निष्ठा॥ ॐ मनोहृति॥ जय, स्तुति॥
वक्रानेपीतवृषश्च, वक्रकानयना
यनं॥ पूरुकाखावलीहस्ता, उद्धृ
धियनमोअरु॥ अरुगन्धदि॥ ॥

भर्जितस्यपु अरुया निनी कलम
व

यूजा॥ भयगीमकुलनिवाकली॥
 ॐ तत्सामि॥ आसनी॥ ॐ दवस्यत्वा॥
 अस्तु कली॥ च्छगय२॥ ॐ दृदस्यते
 च्छेदि॥ यताकाय२॥ ॐ यत्तामे
 मि॥ ध्यान॥ विशुत्पू॥ अनिरादेवां नि
 वावानसमन्विता॥ दधुर्नविपूलं वि
 द्युं श्रुतु नूर्यं विरावयते॥ अमुनाजा
 यनम॥ ॐ वसुधैव कुटुम्बकम्॥ आवाहना
 दि॥ धूप॥ दीप॥ रुल॥ नैवद्य॥ य
 तिष्टा॥ जय॥ स्तोत्र॥ कलकादकिर्ण
 दस्त॥ वामदस्तववत्यर्च॥ नालमेघा
 कृति नूर्यं श्रुतु नार्जनमाम्यर्ह॥ अ
 न्गनम्भदि॥

यष्टिभारुपेण कलसयूजने॥ भय
 गीमकुलनिवाकली॥ ॐ तत्सामि॥
 आसनी॥ ॐ दवस्यत्वा॥ श्री च्छगय
 नम॥ ॐ दृदस्यते॥ यताकाय२॥
 ॐ अस्माकमिन्दु॥ ध्यान॥ यद्रो य
 निस्त्रितीर्दवा॥ नालात्यवदवयली॥
 सिन्दुवयद्रुदस्तु॥ काकियोव
 वनसंस्त्रिती॥ श्रीमूर्तयेनम॥
 ॐ गीश्वरे॥ आवाहनादि॥ धूप॥

दीप॥ रुल॥ नैवद्य॥ यतिष्टा॥ जय
 स्तोत्र॥ मकलनि॥ सिन्धुलात्यनयोनि
 स्त्रि॥ गीदेवायुलमाम्यर्ह॥ अङ्गन
 न्भदि॥

यष्टिभनदकिर्णकलसयूजने॥
 भयगीमकुलनिवाकली॥ ॐ तत्सामि॥
 आसनी॥ ॐ दवस्यत्वा॥ अस्तु क
 ली॥ लक्ष्मी च्छगयनम॥ ॐ दृदस्यते॥
 यताकाय२॥ ॐ वसुधैव कुटुम्बकम्॥ ध्यान॥
 यद्रो यनस्त्रितीर्दवा॥ सिन्धुलात्यनयो
 निरु॥ अङ्गदयवदस्तु॥ धनध
 न्यवनयदा॥ लक्ष्मीमूर्तयेनम॥ ॐ
 यामालेखी॥ आवाहनादि॥ धूप॥ दी
 प॥ रुल॥ नैवद्य॥ यतिष्टा॥ जय॥ स्तो
 त्र॥ कर्मयोगसनासीना॥ तुषान
 कर्मदायमा॥ यद्रो यवदस्तु॥
 लक्ष्मीदेवा॥ नमाम्यर्ह॥ अङ्गनम्भदि॥

गायत्रीनदकिर्णकलसयूजने॥
 भयगीमकुलनिवाकली॥ ॐ तत्सामि॥
 आसनी॥ ॐ दवस्यत्वा॥ अस्तु
 कली॥ च्छगयनम॥ ॐ दृदस्यते

श्रुति॥ यताकाय२॥ ॐ अस्माकमिन्दु॥
ध्यान॥ कया लमाला रुने लं, ख द्वा
ग काय रुसु की। वकि ते सर्व कामा नि
की उया ले प्रयुजयेत॥ कृणुया लमु
लियनम॥ ॐ अथेतो नदी॥ आवा
हनादि॥ धूय॥ दीय॥ रुल॥ ने वद्य॥
पतिष्ठा॥ जय॥ साग॥ सूर्यय ह्री यव
ता गी, कया ला बलि रुषिती। ख रु रं
तक ख द्वा गी, कृणुया लं नमाम्यहं॥
श्रुगन्धदि॥

वायधनयू धंगलयतिकलगयूजा॥
भयगी मकुलनिनीकली॥ ॐ तेत्वा
जामि॥ आसनी॥ ॐ दवस्यत्वा॥ अय
कली॥ कृणुय२॥ ॐ ददस्यते कृति॥
यताकाय२॥ ॐ ॐ नु आसो॥ ध्यान॥
गजाननमेकदन्त, यग्रना ल दृसायमी।
व उरुजा स्वद रु अ, ल रुक य वै ग
धनिनी॥ नागय ह्री यती अ, वि वि
नाजी नमाम्यहं॥ गलयति मूरुय२॥
ॐ आह न ॐ नु॥ आवाहनादि॥
धूय॥ दीय॥ रुल॥ ने वद्य॥ पतिष्ठा॥
जय साग॥ सर्व को य धूक रु वी, स
व वि धि नि वा वली। वि घ्ने रुने गली

म अ, मूवा वृद नमाम्यहं॥ श्रुगन्ध
दि॥
ॐ नमस्यय धि म गुरु कल गयूजनी॥
भयगी मकुलनिनीकली॥ ॐ तेत्वा
जामि॥ आसनी॥ ॐ दवस्यत्वा॥ अय
कली॥ कृणुय२॥ ॐ ददस्यते कृति॥
यताकाय२॥ ॐ अस्माकमिन्दु॥ ध्यान॥
कृणुमा नृ व द ह्यपि, अकयूक कधा निनी।
सर्व नमस्तु विरुध, गी गुरु पुनमाय
हं॥ उरु मूरुय२॥ ॐ उरु यै ननी॥ धूय
दीय॥ रुल॥ ने वद्य॥ पतिष्ठा॥ जय साग॥
सुवर्ण व र्ण सकार्म, यूरुका रु कन द्यय।
सर्व नमस्तु क्रिया रुकी, उरु द व नमाम्यु
ते॥ श्रुगन्धदि॥
निव ग कि कलगयूजा॥ चार्स रुत्वा।
अर्घया गयूजा॥ भयगी मकुलनिनीक
ली॥ ॐ तेत्वा जामि॥ आसनी॥ ॐ दवस्य
त्वा॥ अय कली॥ गनुजा सनाय२॥
ॐ सुय लुसि॥ यद्वा सनाय२॥ ॐ
यद्वा निवे॥ ध्यान॥ नागय नन नना
थ, स सुव रु ग दा धवी। ल अ सदि
त गी लु व, ग नुजा गुरु नमाम्युते॥
क ग वाय गी सदि गाय नम॥ २०॥

कमवादिमूलयनमः॥ ॐ विष्णुना
 टमसि॥ शिवादिमूलयन॥ ॐ श्रीगणेश
 ॐ वृक्षयज्ञानं॥ ॐ विष्णुनाट॥ ॐ
 नमः॥ मरुवायच॥ ॐ दिव्यभगवत्॥
 ॐ यक्षनय॥ आवाहनादि॥ कुम्भन
 यविष्णुनय॥ ॐ सहस्रगीर्वाण॥ ॐ श्रु
 त्मरुत॥ धूप॥ दीप॥ रुल॥ नेत्रय॥
 प्रतिष्ठा॥ जयस्तुत॥ शिवग किस्व
 पाय, सर्वलोकहितायच॥ सर्वदा
 र्वपादयुष्माय, नमोऽस्तु विष्णुमूर्ति
 ने॥ श्रुगन्धदि॥

आदित्यनवग्रहकलमपूजनं॥ ग
 यणमकुलनिरीक्षणं॥ ॐ तत्सत्ता
 मि॥ आसर्ग॥ ॐ देवस्यत्वा॥ अथ
 कर्ण॥ द्वावाचनं॥ ॐ द्वावादेवा॥ द्वा
 वलय॥ चत्वारिंशत्॥ गलयत्तय
 २॥ ॐ आरुनन्द॥ इन्द्रिय२॥ ॐ
 जातवेदस॥ आकाशय२॥ ॐ उरु
 यिवत॥ वायव्य२॥ ॐ द्युतं द्युतपा
 वान॥ अत्रुमावाय२॥ ॐ आनी
 नियुक्ति॥ क्षन॥ यथासनयद्रव

कन, यश्च गुरुसमद्विति॥ सफा न्यन
 धसंस्तुति॥ दिव्यस्य सदा नवि॥
 आदित्ययज्ञानं॥ वनाय श्रुतिपुत्रधि
 देवतायनमः॥ ॐ आरुष॥ १०॥
 आवाहनादि॥ कुम्भनयनिसुनल॥
 ॐ कयानाश्रुत॥ धूप॥ दीप॥ नेत्रय॥
 युक्तीष्टा॥ जयस्तुत॥ कलिभद्रमर्
 जातः विष्णुसंस्तुति॥ मरुव॥ नकपय
 कनद्वन्द्वनीपिशादित्यमणुली॥ श्रु
 तगन्धदि॥
 जागकुरुपूजनं॥ ॐ तत्सत्ताजामि॥ आस
 नं॥ ॐ देवस्यत्वा॥ अथकल॥ क्षन॥
 सुद्वसुटिकसंस्तुति॥ वन्देयद्रवमि
 ली॥ रुमसकविरुवाङ्ग॥ धूपकुरु
 उगधियं॥ अनन्तादिमूलयनमः॥
 ॐ नमोऽस्तु सर्वस्य॥ आवाहनादि॥
 धूप॥ दीप॥ रुल॥ नेत्रय॥ प्रतिष्ठा॥
 जयस्तुत॥ उज्जयिनीचूपाय नाना
 नतविरुषर्ण॥ विषद्वावावकीर्ण
 यत्तमेताभयवै नमः॥ श्रुगन्धदि॥

अकुरुकलीपूजा॥ ॐ तत्सत्ताजामि॥
 आसर्ग॥ ॐ देवस्यत्वा॥ अथकल॥

धन॥ यीतवर्ग महाकायं बीजं
 यूवध्वनिर्ली। रुमालका नशारा
 शुं धनधनयतिपुं॥ स्यामवर्ग
 महोतर्गं सर्वलका नशारितं। नले
 यूवध्वनिर्ली। यरुली धनमाम्य
 दं॥ उरुली उरुयनम॥ उं उरु
 उरुवदहन॥ उं उरुली उरु॥ धूप॥
 दीप॥ रुल॥ नैवद्य॥ प्रतिष्ठा॥ जय
 उ॥ रुमवलावलायुर्कं मरुतकलसा
 रितं। गदायलिमहायुर्कं पुनमामिध
 नाधियं॥ दिव्यवसुयनीधनं रुमा
 लकालरुषितां। नमामियरुनिद
 वां॥ सर्वसमालिपायिनी॥ अरुग
 धदि॥
 गालकापूजनं॥ उं तत्ताजामि॥ अस
 नं॥ उं दवस्यत्वा॥ अरुगुर्ली॥ धन॥
 यशोपनिष्ठादिवां॥ नालात्यलद
 लयुर्ली॥ सिद्धयायमरुतकलसा
 योवनसंस्कारं॥ यशोसेनस्कारं
 वां॥ उरुहृदिकसन्निर्ली। अरुद
 यलरुसध्वनधनयववयुदी॥
 गालकापूजनं॥ उं उरुली॥

उं गीमालका॥ अवाहनादि॥ धूप॥
 दीप॥ रुल॥ नैवद्य॥ प्रतिष्ठा॥ जय
 स्कार॥ पुनमामिमहादेवी॥ श्रीमल
 लेदायिनी॥ यरु मरुलकायं नित्यं
 पूज्येयदयिनी॥ रुली कुवन्दितां दे
 वां॥ सर्वलकापदायिनी॥ पुनमा
 मिसदादेवी॥ लका नामिदविधि
 र्गं॥ अरुगन्धदि॥
 मरुतकलसापूजनं॥ गम्यगीम
 लुगनिर्वाकली॥ उं तत्ताजामि॥ अ
 सनी॥ उं दवस्यत्वा॥ अरुगुर्ली॥
 दानायनम॥ उं दानादेवी॥ धन॥
 न॥ कन्दकमूदसंकां॥ तनुमल
 मेधर्गं॥ रुषि विमलमेकास्यं मरु
 उरुयविरोचयत॥ मरुतकलसा
 तावनायनम॥ उं तावना॥ उं
 फजिषय॥ उं पूनस्त्रादिषा॥ उं
 रूमन्दवा॥ उं गीधर्गलका॥ उं
 अरुवल्की॥ रुषादि॥ अवाहना
 दि॥ धूप॥ दीप॥ रुल॥ नैवद्य॥
 प्रतिष्ठा॥ जयस्कार॥ सवायसवा
 उरुयादधिदिद्विर्मकुरु





वृहत् ॥ अथ यनमः ॥ ॐ अरु नागा
 य किं तवमः ॥ ॐ अत्रिमा ल ॥
 जल्यदा दि ॥ ४ ॥ ॐ न क र स स्वाहा ॥
 न क र ॥ ॐ या ला या ला ॥ या ग ॥ ॐ
 अथ सू य वा ॥ ना मि ॥ ॐ वा स ल म स ॥
 पित न ॥ मू क र यो न म ॥ ॐ स म च
 से ना मि ॥ स म च स वा य न म ॥ ॐ अत्रि
 यु क ल म म ॥ क ल म य न म ॥ ॐ च त्वा
 रि ण म ॥ चे रु ण म य न म ॥
 तत्ता व लियु जा ॥ ॐ ग ल न त्वा ॥ ॐ
 दि वा र्ग त क ॥ स तु ल अ दि ने पू जा ॥
 ॐ स मि त ॥ ॐ गी य त ॥ ॐ अस्मा क
 मि त् ॥ च तु र्वा मि ॥ अ वा द ना दि ॥ धू
 य ॥ दी य ॥ रु ल ॥ मे व य ॥ य ति षा ॥
 ज य ॥ स्ना त ॥ ल क्श्या प त क म ल ना रु स न
 म वि क्ता य रू स क रू म धू सू द न वा स द
 व ॥ मा म य या दि वि कू ध स क ला व ल
 म्ब ॥ अ ग न्धा दि ॥ ज थ दे व यी अ नू
 क म स मू लि क ल ग यु जा ॥
 स म स क ल ग यु ज न ॥ ॐ अत्रि यु ॥
 ॐ रि न य ग रू ॥ ॐ वा रु य य म ॥
 ॐ ले अ वि ष दा ॥ ॐ या रु लि नी ॥

ॐ वृ ह स्य त च्छ दि न सि ॥ ॐ क र्त्तु र्वा ॥
 ॐ अस्मा क मि त् ॥ अ वा द ना दि ॥ धू य ॥
 दी य ॥ रु ल ॥ मे व य ॥ य ति षा ॥ अ
 न ग न्धा दि ॥
 तत्ता अ थ य दा सा ध न ॥ ॐ या ला या ला ॥
 ॐ य वि ष ॥ च द ना ॥ ॐ वि क्ता न ना
 ट ॥ व न्ध न ॥ ॐ य त्प र ॥ अ क ॥ ॐ
 स म्भ र्त्तु मि ॥ ॐ द वा ना या ॥ ॐ य
 म्भा ॥ ॐ ॐ ॥ ॐ स वि ष ॥ ॐ दे वा य
 क म्भ ल ॥ अ थ य ला त म ॥ ॐ स्ना य ॥
 अ स्ना ला च नू स्ना ला प्र त य ल ॥
 ॐ य त्प र ॥ अ क ॥ ॐ मे री ना य य ॥
 ॐ अ न्ये म सि ॥ ॐ क क ता सि ॥ ॐ य
 ना य त ॥ ॐ ॐ य त्वा र्त्तु ॥ ॐ अ
 य रु ता ॥ ॐ त म्भा द म ॥ ॐ ग ता न
 मि त् ॥ ॐ ॐ य त्वा र्त्तु ॥ ॐ स वि
 ष ॥ ॐ त ता सि ॥ अ र्थ या र्थ द न
 द द्वा ॥ ॐ य वि ष ॥ अ क य र्त्तु व त्प
 स्ना न वि ष य ॥ ॐ द वा ना या ॥ ॐ
 स्ना रा व न ॥ ॐ अ दि य वि न्द न म
 सि ॥ स य वि ष ॥ स्ना न रा व न ॥

वाङ्मनोदकि (१) आश्रममूलने ॥ १ ॥
 कृष्णवायुजने ॥ उम्भ (१) नमः ॥ विष्णु
 वंश ॥ नूडाय ॥ ॐ विष्णुवनाट ॥
 शिष्य ॥ लक्ष्मी ॥ वालाश्रय ॥ ॐ
 धृति ॥ ॐ धृति ॥ उययकृ गमादाय
 अग्निदम क्रिया कुर्यात् ॥
 ॐ सफरते ॥ अन्ना ॥ मवावृष्टप
 निष्ठायां ग कि दसकृतासन ॥ ३ ॥
 स्तुति ॥ अलुनेवकु उवालाश्रय ॥
 मि ॥ सफवर्णरुवे ॥ जिह्वा ॥ अवादि
 दकि ॥ एक ॥ साहायस्त्री स्तितावा
 मे ॥ अगच्छ ॥ मन्त्रिकानके ॥ ४ ॥ विष्णुवा
 १ नयधम नयधम नमः ॥ स्वाहा ॥
 ॐ समिध ॥ अस्मादम सप्रिधमा
 दाय ॥ ॐ तदवाप्ति ॥ ३ ॥ ॐ का
 नलसाहा ॥ ॐ कर्तव्य ॥ पलितनिध
 य ॥ धनहायक ॥ ॐ सम्यक्वक्ति ॥
 विस्वीर्यकृ (१) नवक्रान्त्यष्ट ॥
 ॐ नेमः ॥ उजायतयसाहा ॥ ३ ॥ अगस्त्य
 मलायादुतिमर्तु ॥
 ॐ गमास्यवत ॥ नक्रा ॥ ॐ नूडस्यव
 जासि ॥ वामरुलवन्धन ॥

ॐ नूडायव कुरुसायसूनाधियतय ॥
 ततोपजायतिदवेता मोनसं चित्त ॥
 आश्रयगत नूडलाकपावोवने ॥ १ ॥
 मूवात्रयनमः ॥ ॐ शिष्यश्रयनमः ॥
 चतुष्पाश्रय ॥ दवागमय ॥ दिप्त
 २ ॥ विदिप्त ॥ स्वमयि ॥ मत्वायि ॥
 यातालाय ॥ ॐ मेय ॥ स्तुति ॥
 स्तुत्याय ॥ चतुर्मस ॥ आगाम्य
 य ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ आश्रयि ॥
 सवेसादवेसा ॥ १ ॥ १ ॥ विष्णु
 वंश ॥ नूडाय ॥ विष्णुवात्रय ॥
 अथकाय ॥ अथ उलवनमाद
 वंश ॥ अथ सर्वे निलकृ गमादा
 य ॥ दाकि ॥ लस्व ॥ उययनने ॥ ॐ
 ॐ न ॥ ॐ नूडायमि ॥ ॐ पिन्दायउ
 लनाधने ॥
 ततोव कुरुहामसागस्त्य ॥ ॐ नूडय
 स्वाहा ॥ ॐ नूडय ॥ ॐ सामाय
 स्वाहा ॥ ॐ नूडय ॥ ॐ नूडय
 स्वाहा ॥ ॐ नूडय ॥ ॐ नूडय
 ॐ नूडय ॥ ॐ नूडय ॥ ॐ नूडय
 ॐ नूडय ॥ ॐ नूडय ॥ ॐ नूडय
 ॐ नूडय ॥ ॐ नूडय ॥ ॐ नूडय

काय ॥ न काये स्वाहा ॥ ॐ न काये ॥
 ॐ श्रुति न काये स्वाहा ॥ ॐ श्रुति न काये ॥
 ॐ धर्म न काये स्वाहा ॥ ॐ धर्म न काये ॥
 ॐ धृष्ट्याय स्वाहा ॥ ॐ धृष्ट्याय ॥
 ॐ शूर्याय स्वाहा ॥ ॐ शूर्याय ॥
 ॐ वक्रतूपाय स्वाहा ॥ ॐ वक्रतूपाय ॥
 ॐ सफर्तः स्वाहा ॥ ॐ सफर्तः स्वाहा ॥
 ॐ सत्यदाय स्वाहा ॥ ॐ सत्यदाय ॥
 ॐ पथिवाय स्वाहा ॥ ॐ पथिवाय ॥
 ॐ मन्त्राय स्वाहा ॥ ॐ मन्त्राय ॥
 ॐ देवस्य स्वाहा ॥ ॐ देवस्य ॥
 ॐ अषित्वाय स्वाहा ॥ ॐ अषित्वाय ॥
 ॐ यज्ञाय स्वाहा ॥ ॐ यज्ञाय ॥
 ॐ चन्द्राय स्वाहा ॥ ॐ चन्द्राय ॥
 ॐ शुद्धाय स्वाहा ॥ ॐ शुद्धाय ॥
 ॐ मध्याय स्वाहा ॥ ॐ मध्याय ॥
 ॐ सदस्य स्वाहा ॥ ॐ सदस्य ॥
 ॐ अनुमते स्वाहा ॥ ॐ अनुमते ॥
 ॐ यशस्वदाय स्वाहा ॥ ॐ यशस्वदाय ॥
 ॐ वायवे स्वाहा ॥ ॐ वायवे ॥

ॐ अन्निकायस्वाहा ॥ ॐ दैव अन्निकाय ॥
 ॐ वक्रलोस्वाहा ॥ ॐ लोदि ॥
 ॐ सामवेदायस्वाहा ॥ ॐ दैव सामवेदाय ॥
 ॐ दिवेस्वाहा ॥ ॐ दैव दिवे ॥
 ॐ सूययिस्वाहा ॥ ॐ दैव सूययि ॥
 ॐ वक्रलोस्वाहा ॥ ॐ लोदि ॥
 ॐ अथर्ववेदायस्वाहा ॥ ॐ दैव अथर्ववेदाय ॥
 ॐ दिव्यस्वाहा ॥ ॐ दैव दिव्य ॥
 ॐ चतुर्मसस्वाहा ॥ ॐ दैव चतुर्मस ॥
 ॐ वक्रलोस्वाहा ॥ ॐ लोदि ॥
 ॐ सुःस्वाहा ॥ ॐ दैव सुः ॥
 ॐ सुवस्वाहा ॥ ॐ दैव सुव ॥
 ॐ सुःस्वाहा ॥ ॐ दैव सुः ॥
 ॐ त्वनोऽन्न ॥ ॐ दैव त्रिषामाणां ॥
 ॐ त्वनोऽन्न ॥ ॐ दैव त्रिवर्णमणां ॥
 ॐ अयाऽन्न ॥ ॐ दैव मयाऽन्न ॥
 ॐ यतः ॥ ॐ दैव त्रिवर्णमयाऽन्न ॥
 ॐ कर्मलोमः ॥ ॐ दैव अयाऽन्न ॥
 ॐ उदरम ॥ ॐ दैव त्रिवर्णमयाऽन्न ॥
 ॐ वयः ॥ ॐ दैव त्रिवर्णमयाऽन्न ॥
 ॐ लयति ॥ ॐ दैव त्रिवर्णमयाऽन्न ॥
 ॐ तः ॥ ॐ दैव त्रिवर्णमयाऽन्न ॥

चतारुति पूज्य ॥ ॐ सफरं रत्न ॥
 वाहिया उयते यदी ॥ ॐ यत्नं वरु ॥
 यवतिला कतदधिदं मधुम कना
 कतिल गो रत्नं श्रुतिवक्तु म मिध दय
 उयमाला ॥ ॐ ॐ द ० हवि ॥ मय
 गी जयते ॥ ॥ उरु मानस्य ज्ञानक ॥
 गलयति इ अदि सर्वे स्य ० तिला इति
 दद्यात् ॥ चतारुति विमो र्धं तिला इति
 विमो ॥ तिला इति पूज्य ॥ कले मय
 तिष्ठ ॥ सखा इति ॥
 ॐ ॐ यत्नं रत्न ॥
 पूर्वदाय यत्न ॥ ॥ म मिता वलय
 खा ॥ कनि मव वृत्ता यत्न ॥ उव
 लोका यत्न ॥ पुत्र म मखा यत्न ॥
 उया यत्न ॥ विजया यत्न ॥ क म
 दध जा यत्न ॥ वजा यत्न ॥ वि
 पूल क जा यत्न ॥ की र्ति यत्न का
 यत्न ॥ अवि देवता यत्न ॥ इत
 र म यत्न ॥ म वदा यत्न ॥
 सामा यत्न ॥ अक्षि ना यत्न ॥
 पूष्य माला यत्न ॥ ॐ ॐ दाय वेद
 हला यत्न ना विमन ये न नावता

सनाय स्वाहा ॥ रूपादि कृया नाय स्वा
 हा ॥ हनुके कृया नाय स्वाहा ॥
 ॐ गता नमिदु ॥

यमयात ॥ दक्षिण दावा यत्न ॥ रूति गो
 वलय स्वाहा ॥ मा मलय कृया स्वाहा ॥ स्व
 लोका यत्न ॥ अक्षि मखा यत्न ॥
 वजा यत्न ॥ पुत्र मखा यत्न ॥ पूष्य
 लोका यत्न ॥ यम ददा यत्न ॥
 इत र मखा यत्न ॥ विमि यत्न काय
 स्वाहा ॥ अवि देवता यत्न ॥ इत र
 म यत्न ॥ यत्न ददा यत्न ॥ वक्ष
 यत्न ॥ इत र मखा यत्न ॥ पूष्य मा
 ला यत्न ॥ यमा यत्न ॥ इत र मखा यत्न
 ता वि यत्न यम दि वा सना यत्न ॥
 रूपादि कृया नाय स्वाहा ॥ अक्षि वता
 ला यत्न ॥ ॐ यत्न देवा ॥

ववलययात श्रुति ॥ यत्न मदा नाय स्वा
 हा ॥ निवृत्ति ना वलय स्वाहा ॥ सूर्या
 वा वृत्ता यत्न ॥ अन लोका यत्न ॥
 वृत्ति मखा यत्न ॥ रुद्रा यत्न ॥
 मुरुदा यत्न ॥ मुक्त वक्ष मखा य
 स्वाहा ॥ पा मखा यत्न ॥ का मि क

कू वं लया त आकृति ॥ उल न द्या वा य
 स्त्रो हा ॥ आ वा श्र ता व ल य स्त्रो हा ॥ व
 ह म ॥ क का य स्त्रो हा ॥ स त्ये ला का
 य स्त्रो हा ॥ व ह व म स्त्रो य स्त्रो हा ॥ कि
 त य स्त्रो हा ॥ ध न य स्त्रो हा ॥ स मू र व ध
 जा य स्त्रो हा ॥ ग दा य स्त्रो हा ॥ आ ऊ कृ ण
 य स्त्रो हा ॥ सा धे य ता का य स्त्रो हा ॥ अ
 धि दे व ता य स्त्रो हा ॥ क लि य म य स्त्रो
 हा ॥ अ थ व वे दा य स्त्रो हा ॥ वा रु के
 स्त्रो हा ॥ क त वे स्त्रो हा ॥ पू ष्य मा ला
 य स्त्रो हा ॥ कू वे वा य न कू ल ह स्त्रो
 य ध ना धि य त य द्या म ना य स्त्रो
 हा ॥ वि म व कृ ण या ना य स्त्रो हा ॥ न
 क या द कृ ण या ना य स्त्रो हा ॥ ॐ कू वि
 द म् कू व म का ॥

श्रुतिपात्र॥ सिद्धिदा वृक्षाय स्वाहा॥ सिद्धि
दाय स्वाहा॥ दम्पद धजाय स्वाहा॥ मक
य स्वाहा॥ चण्डो य स्वाहा॥ विजयवतका
य स्वाहा॥ शुभिवराय स्वाहा॥ अन्नय
ग किं रुसो या त जाधियतरै च्छा भस
नाय स्वाहा॥ जियू नानुक क ग वाला
य स्वाहा॥ ॐ श्रुतिमुद्रिता॥

नैऋत्ययात्र ॥ कौर्तिकदोष्टा यस्वाह ॥
 वृद्धिदोष्टाह ॥ वामनाकधोष्टा य
 स्वाह ॥ खभयस्वाह ॥ कूलकृष्ण य
 स्वाह ॥ धृतिपताका यस्वाह ॥ अधि
 देवनाथस्वाह ॥ नैऋत्याय खभय
 यनाकसाधियतययतासना यस्वाह ॥
 अग्निजिह्वाकृष्णवालाय स्वाह ॥ ॐ
 यन्मद्वी ॥

वायुवायता॥ धृतिरुकायस्वाहा॥
सिद्धिदायस्वाहा॥ सर्वभूतध्वजोयस्वा
हा॥ ध्वजरुकायस्वाहा॥ नाथरुकाय
स्वाहा॥ हृदयेताकायस्वाहा॥ रुषिदे
वतायस्वाहा॥ वायवंध्वजरुकाय
स्वाहा॥ ध्वजरुकायस्वाहा॥ काल
लूयकृत्यायस्वाहा॥ ॐ नमो
य॥

ॐ नमः नयात ॥ मा कदावृत्ताय स्वाहा ॥

यष्टिदायस्वाहा॥ सूपनिष्ठाधजाय
 स्वाहा॥ त्रिशूलहस्तायस्वाहा॥ का
 किंकेयायस्वाहा॥ सावयताकायस्वा
 हा॥ अश्विदेवतायमेहाकलायस्वा
 हा॥ ॐ नमोनायसद्युक्तिताधियतय
 त्रिशूलहस्तायवृषासनायस्वाहा॥
 सीमन्तूयकृत्तयालायस्वाहा॥ ॐ
 तमीभने॥

अध्यात॥ हर्षधजायस्वाहा॥ चक्र
हस्तायस्वाहा॥ धैर्यचक्रायस्वाहा॥
शिवताकायस्वाहा॥ अधिदेवतायना
मयस्वाहा॥ विष्णुवचक्रहस्ताय
अधिवेतायकृष्णसिनायस्वाहा॥ शु
क्रदेवकुरुवालायस्वाहा॥ ॐ नमो
पदा॥

ॐ इयं ॥ कर्मदक्षजाय स्वाहा ॥ नल
ज्जाय स्वाहा ॥ पीतवर्णपिनाकाय स्वा
हा ॥ वायूवधिविनिदेवताय स्वाहा ॥ व
क्र (गायत्ररुकाय ॐ इयं विष्णवे नमः सा
सनाय स्वाहा ॥ मद्यसाम्यवक्रुपा ला
य स्वाहा ॥ ॐ उक्कलस्य न ॥

यागिनी कलम ॥ यागिनी स्वाहा ॥ शु
 क जाजाय स्वाहा ॥ ॐ वसुधै ॥
 अकलम याग ॥ विद्ये स्वाहा ॥ ॐ ग्रा
 यते लक्ष्मी ॥
 लक्ष्मी कलम याग ॥ लक्ष्मी स्वाहा ॥ ॐ
 शोभा लक्ष्मी ॥
 कृष्णाल ॥ कृष्णालाय स्वाहा ॥ ॐ शु
 धेमानुष्टो ॥ ॥ गलम ॥ गलपतेय स्वा
 हा ॥ ॐ श्री लून ॥ ॥ उ वूयात ॥
 उ व व स्वाहा ॥ ॐ उ व व य काने ॥
 निवम क्रियात ॥ ग वृज सनाय स्वा
 हा ॥ यमा सनाय स्वाहा ॥ निवाय स्वा
 हा ॥ ग क य स्वाहा ॥ ॐ विष्णु वना ॥
 ॐ श्री युग ॥
 आदित्य कलम याग ॥ आरभय स्वाहा
 गलपतेय स्वाहा ॥ इ अय स्वाहा ॥ आ
 काभय स्वाहा ॥ वायव स्वाहा ॥ अग
 दूमानाय स्वाहा ॥ आदित्याय स्वाहा ॥
 ॐ श्री वाय स्वाहा ॥ श्री त्रिउत्पदिद
 वताय स्वाहा ॥ ॐ श्री कृष्ण ॥
 नागय ॥ नागय स्वाहा ॥ ॐ नमो
 सय स्वाहा ॥ यक यक ॥ यकाय
 स्वाहा ॥ ॐ श्री नमो वदहन ॥ य

क० (१) स्वाहा ॥ ॐ युनायक ॥ श्रीलक्ष्मी
 या ॥ (२) स्वाहा ॥ लक्ष्मी स्वाहा ॥ ॐ श्री
 यं ॥ ॐ श्रीमाल ॥ मृत्पुष्पयया ॥ मृ
 त्पुष्पयया स्वाहा ॥ मृताश्विनोय स्वाहा ॥
 महालक्ष्मी गङ्गा सिद्धिदाय स्वाहा ॥ ॐ
 नमः ॥ मङ्गलाय ॥ (३) मयलिङ्ग ॥ (४)
 मयलिङ्ग मय स्वाहा ॥ ॐ मित्रानामा मि ॥
 मृग्यल्लामादि ॥ धातुल्लयधदव
 स्यान्नुकेमेन ॥ सुयानाग ॥ ॐ या ॥ ॐ व
 वे ॥ मूलियाती ॥ समस्तकले मयार्तेक
 जाय ॥ ॐ श्रीजिह्वा ॥ यक्षवलि ॥ स
 न ॥ मन्त्र ॥ मन्त्र ॥ कोमानि ॥ कलेम
 उतिष्ठाइकीयात्सूलनधिय ॥
 ॐ मनाहृति यतिष्ठा ॥ शुवानधिय ॥
 सखाइ तिजपदाना ॥ ॐ श्री
 स्वाहा ॥ दम्भयातन ॥

ततो यथा कर्म ॥ दत्तलक्ष्मयमूलदा
 वस ॥ निम्नकनादि लोकोयचो वीक
 स्वा ॥ लासालक्ष्मय ॥ अत्रिमणुनवि
 स्तानयोयवकलिह ॥ चवकिचाया
 वदवतय ॥ कलेम ॥ (५) ॥

कलेमयूजा ॥ न्यास मृदयवज्रयूजा ॥
 ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं ॥ ॐ दवस्य स्वा ॥ पूर्व ॥

वक्रवर्तुनागनाजाय नमः ॥ मङ्गलाय
 २ ॥ ॐ समुद्रादयस्व ॥ लिलस्यमध्वयुना
 नायकितमीषमाना ॥ ॐ श्रीयावकी व
 यशात्रनाजतश्यादवाविहमारुवन्तु ॥
 दक्षिणवर्तुनागनाय नमः ॥ यम
 नाय नमः ॥ ॐ समुद्राय स्वा ॥
 यष्टिमेधवतवर्तुनागनाजाय नमः ॥
 नम्रदाय नमः ॥ ॐ समुद्रादयस्व ॥
 उरुनेयीतवर्तुनागनाजाय नमः ॥
 सनेस्वयेनमः ॥ ॐ समुद्रादयस्व
 मेष्वनः ॥ सखा विमिश्रिषधी नूताय ॥
 यक्षस्य तायक्षयोरुकोकोनमा
 वाके विधेमयस्वाहा ॥ ॐ श्रीजिह्वा
 कलेमम ॥ (६) मध्यायूजा ॥ ॐ या ॥
 यधी ॥ येष्वजाता दक्षयष्टियुग
 म्पूना ॥ मन्त्र नूवज्ज्ममह ० मन्त्र
 धममानि सफ ॥
 ततो दवा ॥ (७) निम्नकन ॥ मतद
 ता ॥ उवा सुनु नखाय यजमाने
 न ॥ सुच्छालिमिनेत्वाय ॥ सुच्छा
 य ॥ ॐ काष्ठाला ॥ चिक ॥ ॐ दी
 दाय स्वा ॥ क ॥

मृत्तिकास्नानवाक्त्रलस्यंशुना॥ लैरव
दायकं यजमानस्यंशुना॥
ॐ तत्सजामि॥ तिलोयेतर्न॥
ॐ तत्सजामि॥ गजदन्तमृत्तिका॥
ॐ श्रुवादेवामधुमतीवृत्तनेकु
स्वतीनाजस्वस्तिनाशयातिमिज
वेदुल्लवस्येचिश्चयातिविन्दुमन
यन्त्रयनाती॥ वाल्मिकेमृत्तिका॥
ॐ श्रुवत्तनिनुमून॥ यावावान॥
ॐ वाजनेम॥ वाजद्वानया॥
ॐ दवावायाश्रुयान्नयायावदुमि
हविष्यन्दिगीवानमदिनमशत
देवस्यदवजदरुमुकुपस्याय
मार्गगम्बुस्वाहा॥ यवतागुयाचा॥
ॐ श्रुमु४ मिमना॥ दृष्यद्वया॥
ॐ वृत्तस्थारुन॥ समिधहलया॥
ॐ विष्णुनराटमसि॥ विष्णुद्वानया॥
ॐ नमः४ गम्बुवायव॥ निवेद्यावया॥
ॐ दंविष्णु॥ वनाहदन्तयाचा॥
ॐ श्रुवका॥ गम्बुमृत्तिका॥
ॐ वृत्तस्थारु॥ कृष्णदक॥
ॐ वृत्तवधेसूनायानास्वर्गते

तथादृष्टवनीमेधुनर्मगमाता॥ शुभा
दावाकिगमनाच्चैतत्यावर्गनीकिन
हंयुनामि॥ नत्तोदक॥
ॐ यो४ रुलनी॥ रुलादक॥
ॐ दीर्घायुता॥ तलुलोदक॥
ॐ गन्धदावा॥ गन्धेदक॥
ॐ दमाप४ पुवहतावद्यश्मल
श्रयेता॥ यचासिद्धिदाहान्तर्नयच
लाधेसूनीनुगम॥ श्राद्धादक॥
ॐ हविष्यताविमोश्राद्धविष्णोर्द
श्रुविवासति॥ हविष्णुद्वानया॥
ॐ हविष्णोर्दश्रुमुस्य॥ पूषाद
क॥
ॐ यतीर्थनिष्ठवनकि॥ तीर्थेदक॥
ॐ यय४ दृष्टिद्या॥ इन्द्र॥
ॐ दधिका॥ दधि॥
ॐ तजामि॥ दृत्त॥
ॐ मधुवाताजगयत॥ मधु॥
ॐ नमः४ गम्बुवायव॥ सकृन्ना॥
ॐ वसा४ यविजम॥ सद्रुधमन॥
समूदकलगनलुये॥ द्यायाव
दनी४॥
द्यावलिहातयूजायातकंदवद

विविधक॥ ॐ तत्रैव दव॥ चन्द्रना
 दिसउलश्री भावदि॥ सुरुश्रवति
 ॐ मनाहूतिप्रतिष्ठा॥ देवकापन
 नपाय॥ ॐ उ तिष्ठवक्त्रस्यन॥
 दवविस्मृति॥ लासालावयेन॥
 वाक्त्रलनसुस्मितावनैय॥ ०७॥
 नैवाद्यदावनदेवयस्मृमपुयय
 ने॥ थलिलस्यलनरु॥ गस्त्राय
 य॥ ७॥ ॥ ॐ ॐ देविष्णु॥ रुडया
 ० निधय॥ निडायातश्रुतिवि
 यद्यादतिन॥ ०८॥ ॐ वायव्येष्ट
 यद्यान्याप्रातिमत्तनदानकलम
 म॥ १॥ श्रीरामस्मृत्सुगस्त्राला
 रिस्त्रालावाप्राति॥
 यच्छसुरेकानेवयावदय॥ चित
 लेनेसाधन॥ ॐ १॥ स्वाहा॥ ॐ
 वस्त्रयस्त्राने॥ वादस॥
 ॐ सुव१ स्वाहा॥ ॐ विष्णुवरा
 टमसि॥ नासि॥
 ॐ स्व१ स्वाहा॥ ॐ नम१ मरुवा
 यवा॥ सिनस॥ मूबनसदपाद
 ननिवट॥ निवनेयात१ साध
 न॥ श्रुतिविय॥ मूलमकुन

धियक॥ ॥ ततादवदमक्रिया॥
 ॐ ॐ स्वाहा॥ ॐ कउस्यजानिमिक
 उत्यनारिनसि॥ मात्वादि० सीन्मा
 दि० सीस्त्राहा॥ यानिकल्पने॥
 ॐ ११ स्वाहा॥ ॐ गक्रुश्रियावधि
 नाश्रुतिवनस्यताना॥ गक्रुविश्व
 स्यरुतस्या॥ गक्रुश्रियामसिस्त्राहा॥
 गक्रुधिन॥ ॥ ॐ सुव१ स्वाहा॥
 ॐ सुस्त्रिन॥ ॐ ॥ यूपवर्ण॥
 ॐ स्व१ स्वाहा॥ ॐ मादि१ म्पाव
 दा॥ गामेभोनयने॥
 ॐ तस्त्रविउस्त्राहा॥ ॐ पा१ मयस्त्र
 हावा१ नायस्त्राहा१ दानायस्त्राहा१ चक्रु
 क्रुस्त्राहा॥ गक्रुयस्त्राहा१ चक्रुस्त्राहा१ मन
 सस्त्राहा॥ जातकम्पा॥ निवृत्तावन
 काय॥ दवदू१॥ निडाकलसा
 रिशर्क॥ ॐ देवस्यत्वा॥
 यथादवस्यजीवन्त्यासे॥
 दवशाद्वनेयश्चयानिविय॥
 ॐ गमनात्वा॥ ॐ जातवदस॥
 ॐ ॐ मा१ नूडाम॥ ॐ दृतेचतपा॥
 ॐ नमोवत्सुमय॥
 श्रुति१०८॥ ॐ पूनाकुनस्य

विष्णो विष्णि नृदा दय दधि वा अश्व
 दानुमा जानि नय चन्द्र मसि खध क्रिष्ण
 साश्व नृदि अय कृन्ना या के लीना सोद
 यद्वि यता व (ध) सिखा हा ॥
 मनी ह ति यति छा ॥ ॐ वने र्ध स्वा
 हा ॥ ॐ वृक्ष य हा नी ॥ नि कु मर्न ॥
 ॐ रु (न्म) दे व स्वा हा ॥ ॐ का य स्वा हा
 क र्मे स्वा हा क र्म म र्मे स्वा हा धि मा धी
 ता य स्वा हा म न ४ य हा य ता य स्वा हा
 रि रुं वि हा ता या दि य म धे स्वा हा
 दि ह्ये सु म् उ का य स्वा हा स न स्व र्ध
 स्वा हा स न स्व र्ध पा व का य स्वा हा स
 न स्व र्ध व रु ल्ये स्वा हा यू ष्म स्वा हा यू
 ष्म य प थ म य स्वा हा यू ष्म न वे न्धि वा
 य स्वा हा ल वृ स्वा हा ल वृ उ नी पा य
 स्वा हा ल वृ य नृ नृ पा य स्वा हा वि ष्व
 स्वा हा वि ष्व व नि रू पा य स्वा हा वि
 वा नि पि वि ष्वा य स्वा हा ॥ ना म क व
 न ॥ लू डा हा र्म उ लि ०० चा वि या ॥
 ॐ स्य धी म दि स्वा हा ॥ ॐ या ४ रु
 लि नी ॥ रु ल पा स न ॥ सि सा व
 सा च्छा य ॥

ॐ धि या जान स्वा हा ॥ ॐ अ न्न या ॥
 ॥ अ न्न या स न ॥ च वृ ष्ठा य ॥
 ॐ यु वा द या स्वा हा ॥ ॐ मू ष्म न दि
 वा अ न्ति द धि वा वृ ष्म न व र्मे त र्मा जा
 त म नि म्मा क वि ० स मा ज म ति धि ३
 ना ना मा स न्ना पा र्ज न य रु दे वा ॥
 चू उ क र्मे ॥ लू र्मा न डा हा र्वा न वा ॥
 ॐ त स वि उ स्वा हा ॥ ॐ रु र्दे क (रू) रि ४
 गू लू या म र्दे वा रु र्दे व (ध) मा क रि य
 उ जा ४ ॥ स्वि न व ली सु वा ० स रु न रि
 य लि म दि दे व दि नै य दा य ॥ क र्मा
 रु र्दे ॥ लू मू लू डा हा मू लू च क र्मे नि ॥
 ॐ वने र्ध स्वा हा ॥ ॐ वृ नृ द ता ॥ वृ त
 व न्ध न ॥ म य जी य दा न ॥ ॐ वि ष्व
 नू पा य वि ष्व रु ना ना य म य धी म दि
 त न्ना ३ चू र पु चा द या त ॥ जाना च्छा य ॥
 ॐ रु (न्म) दे व स्वा हा ॥ ॐ वृ त न
 दी का ॥ दी का य दा न ॥ मू ल म रु ॥
 ॐ स्य धी म दि स्वा हा ॥ ॐ अ रु ष्म ॥
 स मा व र्मे न ॥ स त रि दि का न का
 र वा य के ॥ ॐ धि या जान स्वा हा ॥ ॐ
 शु म्ब क य जा म रु ॥ वि वा हा ॥ वृ ष्म
 व न कू य के ॥

तिरिकुंश हामिस्तुता ॥ अतिरिकुंश
 हामिस्तुता ॥ अनास्तां चनास्तां त
 लुक् क्रियते मम साहा ॥ वेष्मनना
 यविप्रदं अर्न चितो यधामदि तनो
 वक्रि ४ येचादया त ॥ ॥ ॐ देवेष्टु
 स्थेनसा वयज नमो सि म नूयुष्टुता
 नमो वयज नमो सि चितुष्टुता स्थेन
 सा वयज नमो सि अस्मदु तस्थेनसा
 वयज नमो सि स्थेन सप नसा वय
 ज नमो सि यच्चाहमनो विद्वान्
 कावयच्चा विद्वान् सस्य स वस्थेन
 सा वयज नमो सि ॥ ॐ सुस्ति न
 ॐ ॥ ॐ यय ४ यथि यो ॥ ॐ वि
 श्वानरट ॥ ॐ अतिदेवता ॥ ॐ
 ओ ४ ममि ॥ ॥ वाक्कणदक्रि ह
 दानी ॥ वाचनी ॥ वलिरु लनी ॥ द
 गवलि पल्लाय यन ॥ ॐ को मका
 मधुय ॥ सिलु वयामे नी ॥ ॐ सुमि
 त्रियो न ॥ ॥ पूरुत्तिका वयन ॥
 यजमानस्य यथ काय सिरुवाहे
 ति अहनाय यरु अथि वासन
 पूरुत्तिका ति सुमूदु लममु ॥

ॐ पूरुत्तिका विचिनाय तसू पूरुत्तिका
 नायता वरुन विभीषवदा वरुमूक
 ० मतक गाला ॥ असीसाय धेत ॥
 ॐ आयाय ॥ यथ देवस्य मृति ॥ ॥
 आमी वदि ४ ॥ ॐ अति जे वि ॥ अति
 या ॥ ॐ यस्य वृ म्म ॥ अचायया ॥
 ॐ स वदि नका ० रुविषाच नमसा
 दिने वसुकि ४ सम्मनू डि ४ समिष्टा वि
 यदे वरिने कांदिने सग च्छुय
 स्ताहा ॥ ॥ ॐ म इय ॥
 ॐ तनू पा अति सि ॥ ॐ मधुदेवा
 सविता मेध देवा सवस्वती आदयातु
 मेध व विनी देवा अवेत्तियुक् नय
 जी ॥ अ अस्तु ॥ ॥ अ गव आयाय
 ता ॥ वाग जाल चेत ॥ अ गव आव
 लरु लय तय ले ॥
 ॐ आ यय ॥ ॥ यजमानादि सम
 रुया ते अ विषक ॥ अययि अद के
 ने ॥ चदनोदि आमी वदि ४ ॥ न्या स
 लिकाय ॥ साक्रिथ यदिनया ॥ ॐ
 तिदिन पूरुत्तिका ॥ यरु स्ताहा ॥ ॥
 ॥ ॥ ना वि या क्रिया वल्या चन ॥ ॥
 ॥ ॥

देवता विष्णु मन्त्र

सति या विधि ॥ यश्च वलियूजा ॥ च
 उद्वा न यूजा ॥ स्वस्ति वाचन ॥ ॐ म
 मालिना ॥ ॐ न्धनेन युञ्ज्याय ॥
 बुद्धायुजा तस्माय न ॥ स्वानतनेरु
 ना ॥ ॐ कया न प्रियुति य विस्मव
 ल ॥ कलमचुर्न ॥ य तौरुति ॥ ति
 लाइति ॥ कलमयुतास्मा ॥ सखा
 इति ॥ दम वलिवियक ॥ वलिया
 तस्माय अइति उनवन ॥
 धर्मदनक ॥ वलिया तस्माइति
 विय ॥ दम या तन विय ॥ वाक
 लयूजा ॥ मालिक पूष्टिक ॥
 य वध्म न्यादि ॥ अन्नसं कल्प ॥
 वाइति नेटु लिको हाम ॥ वाक
 लदक्रिष्ण ॥ दम वलिच्छाय ॥ स
 य ववा सन ॥ यला तमा चन ॥
 वाचन ॥ यूष्मिका वयत ॥
 ॐ दवागमु विद्या ॥ अस्मि सापथ
 त ॥ ॐ उलिष्ठवक्रास्यते ॥ वक्रा
 विसर्जने ॥ ॐ विष्णो वराटमसि ॥
 युला तमाचन ॥ ॐ कस्मा विमूश्च
 ति ॥ वक्रामाचन ॥ ॐ श्रुया श्रुया

प्रियवन्ध ॥ ४

न्धचा विष ॥ नमन समस्त अहि ॥ य
 यस्मान्नमन आगम तस्मात् ॥ ॐ उ
 वृष्टि सायुज्या च धन न च ॥ वदिमा
 चन ॥ ॐ समृद्धिने व्हा ॥
 ॐ ननूपा ॥ ॐ न्ध ॥ ॐ सुखद वी ॥
 ॐ श्रमन आया यता ॥ ॐ गुणयूष ॥
 रुस्मति लर्क कावयत ॥ ॐ वहा मी ॥
 ॐ ह ॥ ॐ उवे ॥ ॐ ह ॥ ॐ
 ह ॥ ॐ वे ॥ ॐ यस्मा ह ॥
 वक्राकष्ट हाम ॥ ॐ कृताय कर्मल
 हा ह ॥ ॐ कृताय कर्मल हा ह ॥
 ॐ यरु यरु गच्छ ॥ ताम्बूल दया
 त ॥ ॐ गच्छ ॥ ॐ गच्छ ॥ ॐ गच्छ ॥
 सोन वारु न ॥ यउ वक्रादया दवा
 स्मृता गच्छता म न ॥ क्रमस्वति
 कमा कवनी ॥ यरु विसर्जने ॥
 कलम विसर्जने ॥ सिधर्म लाय ॥
 गल ॥ ॐ गल ॥ ॐ गल ॥ ॐ गल ॥
 यजमाना सिधेक ॥ चदेना दिसु
 नशा मा वदि ॥ यजमान निम्रच्छन
 याय ॥ थलिल न लाय ॥ थलिल
 या न ज वन इतक ॥ आ वति ॥ य
 तिष्टा ॥ कलने लाय ॥

१ मूलिकले मदेव याता ॥
१ यमकले मसमन ॥ वरुणकले म
ताथ ॥ योनिनीकले वी० स ॥ क्य
०० छदवता ॥ उडुकेले मडादित ॥
०० उकेले मनाजायात ॥ उिका नेत्र
साय ॥ धृजकासि ॥ निवे मकियज
मानयात ॥ मालकाश्रदितमाल
काय ॥ यूजचेदयाय ॥ साखिधये ॥
०० तिअरुनाय यरु विधि ४ समाप्ता ॥
यूजयि रू निवत्रटयाय यासहा म
यायमाले कलुया उलवरागस ॥
दवदसायेतिवादानदनेसकिले म
दिवेलिमालकावा सतय ॥ विधि ५
यरुयाय ॥ धूनकावथमि सकर्यम
लकलुसकायावताक यूयकेरुनी ॥
ककलपूजायायमाल ०० नायपूजा ॥





